स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

विकास के फोटो

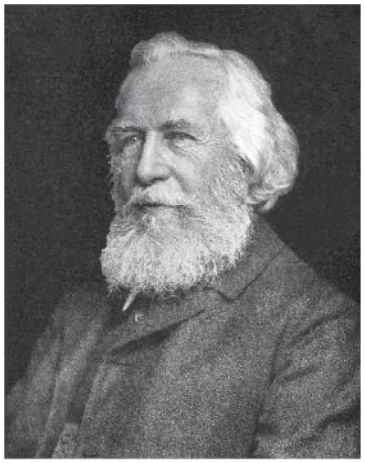

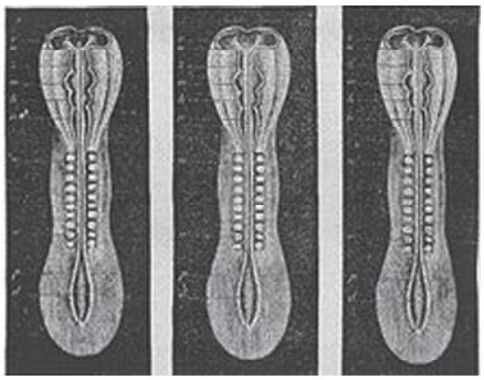

एक ही भ्रूण के तीन चित्र जिन्हें हेकल ने कुत्ते, मुर्गी और खरगोश के भ्रूण कहा था।

जैव विकास के सिद्धांत के प्रतिपादक चार्ल्स डारविन और अल्फ्रेड वालेस ने कभी सोचा भी न होगा कि कुछ अति उत्साही लोग उनके सिद्धांत के पक्ष में प्रमाण खोजने में छल-कपट का सहारा लेंगे। जहां प्रमाणों के आधार पर जैव विकास के सिद्धांत की लगातार पुष्टि हुई है और अपने संशोधित रूप में आज यह जीव विज्ञान का एक बुनियादी सिद्धांत है वहीं ऐसी करतूतों के भी कई उदाहरण मिलते हैं।

मशहूर पैथॉलॉजिस्ट रुडोल्फ फिरकॉव के एक शिष्य अर्न्स्ट हेकल का नाम इस इतिहास में कई बारी आता है। हेकल जेना में प्राणी विज्ञान के प्रोफेसर थे। हेकल ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि किसी भी प्राणी का भ्रूण अपने विकास के दौरान जैव विकास के इतिहास को दोहराता है। आज तो यह सिद्धांत अमान्य हो चुका है मगर इसका मतलब यह था कि जब गर्भाशय में मनुष्य के भ्रूण का विकास होगा, तो वह बारी-बारी उन अवस्थाओं से होकर गुज़रेगा जो जैव विकास में उसके पूर्वज प्राणियों से मेल खाएगी। जैसे मनुष्य का भ्रूण पहले मछली जैसा दिखेगा, फिर उभयचर जैसा दिखेगा, फिर पक्षी के समान दिखेगा।

हेकल ने अपने इस सिद्धांत को प्रमाणित करने का बीड़ा भी उठाया। उन्होंने मनुष्यों के भ्रूण का अध्ययन करके बताया कि विकास की एक अवस्था में वह मछली समान दिखता है। जैसे उन्होंने यह दर्शाया कि मनुष्य के भ्रूण में एक अवस्था में गलफड़ों की दरारें होती हैं जो आजकल की मछलियों में पाई जाती हैं। दिक्कत यह थी कि इसके लिए भ्रूण के चित्रों में फेरबदल की गई थी। और तो और, उन्होंने अपने शोध पत्र में एक ही भ्रूण का चित्र तीन बार छापा था और लेबल अलग-अलग दे दिए थे - लेबल के मुताबिक एक भ्रूण कुत्ते का, दूसरा मुर्गी का और तीसरा खरगोश का था। इसके आधार पर उन्होंने इनके बीच समानता दर्शाई थी।

अलबत्ता, वे पकड़े गए और जेना के विश्वविद्यालय की अदालत में उन पर मुकदमा चला। हेकल ने कबूल किया कि उन्होंने झूठे परिणाम प्रकाशित किए थे, मगर अपने बचाव में कहा, "इस इकबाल से मेरा सिर शर्म से झुक जाता मगर सैकड़ों अन्य उम्दा प्रेक्षक और जीव वैज्ञानिकों पर भी यही आरोप है।" हेकल की प्रोफेसरी बच गई। मगर फिरकॉव का मत था कि हेकल एक मूर्ख है। वैसे जैव विकास का सिद्धांत ऐसे कपटी प्रमाणों का मोहताज़ नहीं था।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादक: डॉ. सुशील जोशी